ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 138-140**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार की महिलाओं का योगदान

डॉ0 मो0 क्यूम
सहायक प्राध्यापक– राजनीति विज्ञान विभाग, रामाधीन कॉलेज, शेखपुरा (बिहार) भारत

Received-23.04.2026, Revised-01.05.2026, Accepted-09.05.2026, **E-mail:mdqayumbodhgya@gmail.com**

सारांशः *महात्मा गाँधी ने सर्वप्रिय आन्दोलन को दिशा–निर्देश, शक्ति तथा प्रेरणा प्रदान किया, जिसके फलस्वरूप बड़ी संख्या में महिलाएँ भी इस आंदोलन में घर से निकलकर इसमें भाग ली। महिला उत्थान के आन्दोलन में गाँधीजी को शायद सबसे बड़ी देन यही थीं कि उन्होंने महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। चूंकि गाँधी के स्वतंत्रता आन्दोलन के तरीके मुख्यतः असहयोगात्मक तथा अहिंसक थे। अतः महिलाएँ इसमें आसानी से भाग ले सकती थी। उन्होंने कहा था कि अगर भारत की महिलाएँ जाग जायेगी तो देश को आजादी प्राप्त होने से कोई रोक नहीं सकता। गाँधीजी के आगमन से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं का योगदान संभव हो सका। महिलाओं ने मुख्यतः जिन राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लिया, उनमें विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, शराब की दुकानों के बाहर धरना देना आदि शामिल थे। महिलाओं ने सर्वप्रथम बड़ी संख्या में सन् 1920 के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया।*[1]

गाँधीजी को पूर्ण विश्वास था कि देश का भविष्य महिलाओं के त्याग पर निर्भर है। वे चाहते थे कि महिलाओं को इतनी स्वतंत्र होनी चाहिए जिससे कि वे अपनी मानसिक शक्ति को उन्नत कर सकें।[2] *महिलाओं के बारे में गाँधी का विचार था कि एक औरत मर्द का साथी तथा उनकी मानसिक क्षमता बराबर है। महिला को यह अधिकार है कि वह अपने को मर्द के समान स्वतंत्र समझें।*[3]

कुंजीभूत शब्द– राष्ट्रीय आंदोलन, सर्वप्रिय आन्दोलन, महिला उत्थान, स्वतंत्रता आन्दोलन, असहयोगात्मक तथा अहिंसक, बहिष्कार।

बापू ने एक बार अपने सपनों के भारत के बारे में कहा था कि एक ऐसे भारत के लिए कार्य करेंगे जिसमें निर्धनतम व्यक्ति भी यह महसूस करेगा कि यह उसका देश है और जिसके निर्माण में उसकी आवाज भी रही है, एक ऐसा भारत जिसमें उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग न हो, एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदायों के लोग पूरी तरह हिलमिल कर रहे। ऐसे भारत जिसमें छुआछूत का कोई स्थान न हो, मर्द एवं और समान अधिकार के हकदार हो।

बिहार की महिलाएँ महात्मा गाँधी के आह्वान पर स्वतंत्रता संग्राम एवं रचनात्मक कार्यों में भाग लेने के लिए अत्यधिक तत्पर थी। गाँधी युग के पूर्व यहाँ महिलाएँ परदा–प्रथा के कारण मुख्यतः घर की चारदीवारी के भीतर रहती थी। गाँधीजी की पुकार पर बड़ी संख्या में महिलाओं ने, जिनमें ग्रामीण तथा अशिक्षित महिलाएँ भी शामिल थी, परदा–प्रथा का परित्याग किया तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए खुलकर सामने आयी।

महात्मा गाँधी के अनुसार पवित्रता परदे की आड़ में रखने से नहीं पनपती तथा उपर से लादी भी नहीं जा सकती। परदे की दीवार से महिलाओं की रक्षा नहीं की जा सकती। उसे तो भीतर से ही पैदा होना चाहिए और अगर उसका कुछ मूल्य हो तो उसे सभी प्रकार से अनियंत्रित प्रलोभन का तिरस्कार कर सकने में समर्थ होना चाहिए। उसे तो सीता की भाँति निडर होना चाहिए। वह पवित्रता क्या जो पुरुषों की नजर में ठहर न सके। पुरुषों को अगर वास्तव में पुरुष बनना है तो उनहें स्त्रियों पर उसी प्रकार विश्वास रखने के लिए मजबूर किया जाता है। हमें एक अंग आंशिक अथवा पूर्णरूपेण पंगु बनाकर नहीं रखना चाहिए।[4] यंग इंडिया में उन्होंने लिखा है कि नारीत्व के विकास को रोकने का अर्थ है स्वतंत्र एवं स्वच्छन्द विचारों का हनन। उत्साही एवं वीर महिलाओं को परदा–प्रथा में रोक कर हमलोग जो महिला समाज के साथ अन्याय कर रहे है, उसका मतलब है कि हम हजार गुणा अधिक कष्ट को आमंत्रित कर रहे है। इसका कारण हमारी कमजोरी असमंजस, मानसिक अकुशलता तथा क्षुद्रता है।[5]

1920 ईसवी में भारत की आजादी की लड़ाई की वागडोर गाँधी के हाथों में आयी। उन्होंने संसार को सत्याग्रह का अमोघ अस्त्र दिया। सत्य और अहिंसा उनका विरद था और चरखा मूर्तस्वरूप। गाँधीजी ने बताया कि स्त्री त्यागी है और इसी कारण अहिंसा की मूर्ति है। अतः कताई के कार्यों में स्त्रियों की ही विशेषता रहेगी[6] और अन्ततः नया अस्त्र स्त्रियों को अहिंसात्मक युद्ध के मैदान में खींच लाया। लाखों स्त्रियों ने अपने घरों में चरखा चलाकर सारे भारत में अहिंसात्मक युद्ध के वातावरण का निर्माण किया।[7]

खादी का इतिहास ग्रामीण महिलाओं के जीवन के साथ जुड़ गया। बापू के आह्वान पर महिलाओं ने आगे आकर खादी के काम को अपनाया। गाँधीजी ने सभी वर्गों की महिलाओं से सूत काटने की अपील की। खादी तथा चरखा संपन्न वर्गों की महिलाओं के लिए आध्याण, मध्यम वर्ग की महिलाओं के लिए आमदनी का स्त्रोत, निम्न वर्ग के लिए जीविकोपार्जन का साधन तथा विधवाओं के लिए मित्र का काम करेगा यही गाँधीजी के विचार थे।[8]

अगस्त, 1920 में भागलपुर में हुए बिहार पॉलिटिकली कन्फ्रेंस में अहिंसा के सिद्धांत को स्वीकार किया गया। इस प्रस्ताव के अनुरूप बिहार में तेजी से परिवर्तन आये तथा राज्य के विभिन्न स्थलों में इस दिशा में गतिविधियाँ प्रारंभ हो गयी। दिसम्बर के प्रारंभ में गाँधीजी का बिहार दौरा हालाँकि अल्पकालीन था, परंतु इसने अहिंसा के सिद्धांत को एक नयी शक्ति दी तथा पूरे प्रान्त को जागृत करने में मदद पहुँचायी।[9] महिलाओं ने खुशी–खुशी अपने गहने तथा जेवर गाँधी को दे दिये।[10] 3 दिसम्बर 1920 को पटना के सिंकदर मंजिल में गाँधीजी ने पर्दानशीन महिलाओं की एक बड़ी सभा को सम्बोधित किया तथा उन्होंने औरतों के बीच चेतना जगाने की भरपूर कोशिश की। उन्हें देश कल्याणार्थ दान देने का भी आग्रह किया। इस सभा में 500 से भी अधिक महिलाओं ने भाग लिया था। वे सभी महिलाएँ परदा प्रथा का त्याग करके आयी थीं।[11] गाँधीजी ने महिलाओं से चार चीजों की भिक्षा माँगी। उनकी पहली भिक्षा थी कि हिन्दू तथा मुसलमान एक दूसरे का अपना दुश्मन न समझें। उनकी दूसरी भिक्षा थी कि प्रत्येक महिला चरखा पर सूत कातें। महिलाओं से तीसरी भिक्षा यह माँगी की वे अपने पुत्र तथा भाइयों को किसी ऐसे विद्यालय में न पढ़ने दे जो या तो सरकारी हो या सरकारी अनुदान पर चल रहा हो। उनकी चौथी भिक्षा पैसा की थी। उन्होंने महिलाओं से यह भी अनुरोध किया कि वे जो गहने भिक्षा में देती है उनकी जगह पर नये गहने उस दिन तक नहीं बनवाये जब तक पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति नहीं हो जाती है। गाँधीजी के आह्वान पर श्रीमती मोइनुल हक ने अपनी चार सोने की चूड़ी, जिनमें बहुमूल्य पत्थर लगे हुए थे, दान में दे दिये। उसी वक्त दो हजार रुपये मूल्य के गहने तथा दो सौ रुपये नगद इकट्ठा किये गये।[12] उसी दिन गाँधीजी ने पटना सिटी के कायस्थ पाठशाला में महिलाओं की एक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

सभा को सम्बोधित किया। उन्होंने हस्तकरघा के वस्त्रों तथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने की अपील की। उन्होंने उनसे दान देने को भी कहा। उसी समय डेढ़ हजार रुपये नगद के अलावे बड़ी मात्रा में गहने दान में दिये गये।[13]

4 दिसम्बर 1920 को गाँधीजी ने आरा का दौरा किया। वहाँ उन्होंने धर्मेन्द्र प्रसाद दास के मकान में महिलाओं की एक छोटी सी बैठक में भाषण भी दिया। वहाँ भी उन्होंने महिलाओं को दान देने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके प्रत्युत्तर में महिलाओं ने खुशी–खुशी अपने सोने तथा चाँदी के जेवर दान में दे दिये।[14]

गुरूकुल काशी की श्रीमती शान्ति देवी ने पहली अगस्त, 1921 को बेतिया में बैठक को सम्बोधित किया तथा महिलाओं से विदेशी कपड़ों के बहिष्कार एवं असहयोग आन्दोलन में भाग लेने की अपील की। महिलाओं से स्वयं खादी बनाने का भी अनुरोध किया।[15] शान्ति देवी ने 14 अक्टूबर को महिषी में भी एक बैठक को सम्बोधित किया तथा लोगों से विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने को कहा। धारा 144 के अन्तर्गत श्रीमती शान्ति देवी के खिलाफ एक नोटिस जारी किया गया जिसके द्वारा उन्हें असहयोग आन्दोलन तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का प्रचार करने से रोक दिया गया।[16]

गाँधीजी ने अभियान को और भी गति देने के उद्देश्य से अपनी पोशाक में परिवर्तन कर दिया और 21 सितम्बर 1921 ईसवी को अर्द्धनग्न फकीर का वेश–भूषा धारण कर लिया।[17] 30 सितम्बर को पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर और दूसरे स्थानों पर खादी–जुलूस निकाले गये और सभाएँ हुई। इन सभी सभाओं में विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गई और स्वदेशी के समर्थन में उत्साहपूर्ण भाषण हुए। 5 एवं 6 अक्टूबर, 1921 को हजारीबाग में बिहारी छात्र संघ की एक बैठक श्रीमती सरला देवी चौधरानी की अध्यक्षता में हुई। उन्होंने जोशपूर्ण शब्दों में छात्रों से अपील करते हुए कहा कि वे सरकारी विद्यालयों तथा महाविद्यालयों का परित्याग करें और वेल्स के राजकुमार की भारत यात्रा के दौरान होने वाले किसी भी अभिनंदन समारोह से अपने को अलग रखें।[18] 8 तथा 9 अक्टूबर को गिरीडीह एवं पचम्बा में महिलाओं की बैठक को सम्बोधित किया। इसके बाद उन्होंने छोटानागपुर के भी कई जिलों का दौरा किया तथा लोगों को चरखा एवं खादी की महिमा बतायी।

इधर पटना में वेल्स के राजकुमार की भारत यात्रा के खिलाफ बहिष्कार आन्दोलन का नेतृत्व श्रीमती सावित्री देवी ने किया। उन्होंने अक्टूबर, 1921 में पटना सिटी तथा दानापुर में बैठकें की तथा लोगों के स्वदेशी वस्तुओं के महत्व के बारे में बताया। 22 अक्टूबर को सावित्री देवी ने मुंगेर की यात्रा की तथा वहाँ महिलाओं को तीन बड़ी सभाओं को सम्बोधित किया। 24 अक्टूबर को सावित्री देवी आचार्य कृपलानी के साथ जमुई गई तथा वहाँ उन्होंने असहयोग आन्दोलन का प्रचार किया। इसी समय गिद्धौर महाराज के भतीजा एवं अपने क्षेत्र में असहयोग आन्दोलन के सर्वप्रथम नेता कुमार कालिका सिंह पर धारा 107 के अन्तर्गत कार्रवाई की जाने को लेकर भारी उत्तेजना फैली। 24 अक्टूबर को श्रीमती सावित्री देवी एवं आचार्य कृपलानी भी इस मुकदमें के दरम्यान अदालत में उपस्थित थे।

चौरी–चौरा काण्ड के पश्चात् अंग्रेजों ने क्रोधित होकर भारतीय जनता पर जुल्म ढाना शुरू कर दिया। गाँधीजी गिरफ्तार कर लिये गये और उन्हें छः साल की कैद की सजा हुई। बिहार में उस समय शराब की दुकानों पर शान्तिमय सत्याग्रह का कार्यक्रम चल रहा था और इसमें कई ऊँचे घराने की महिलाएँ भाग ले रही थीं। गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद भी यह कार्यक्रम यहाँ जारी रहा। अलीबन्धुओं की माताजी ने इस समय उल्लेखनीय कार्य किये। उन्होंने स्वयं घर–घर जाकर लोगों से 'अगोरा कोष' के चन्दा माँगी और शराब बन्दी के कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके बाद सत्याग्रह की गति में कई और उतार–चढ़ाव आए। विहार की महिलाओं ने मंद गति के समय चरखा सम्हाला और जब–जब आन्दोलन की गति तेज हुई तो वे झण्डा लेकर मैदान में उतर पड़ीं। इस सिलसिले में पटना के एक बैरिस्टर की पत्नी श्रीमती सी०आर० दास और श्रीमती उर्मिला देवी का नाम उल्लेखनीय है। ये बिहार की उन जागरूक महिलाओं में थी जो निर्भीकतापूर्वक हर प्रकार के सार्वजनिक कार्यों में भाग लेती थी। राष्ट्रीय नेताओं के आगमन पर उनके स्वागत का आयोजन करना, सभा सम्मेलन में उनका साथ देना और संकेतों पर लड़ाई के मैदान में कूद पड़ना आदि काम वे करती थी। गया काँग्रेस के समय श्रीमती उर्मिला देवी ने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सराहनीय प्रयास किए।[19]

सितम्बर, 1925 में जब गाँधीजी ने बिहार का दौरा किया तब जय प्रकाश नारायण की पत्नी श्रीमती प्रभावती देवी उनके साथ थी। इस यात्रा के प्रारम्भ में उन्होंने पुरलिया में हो रहे बिहार प्रादेशिक संघ की बैठक में भाग लिया। यहाँ 13 सितम्बर को उन्होंने महिलाओं की एक बैठक की अध्यक्षता की। किसान एवं मजदूर वर्ग से करीब दो हजार से अधिक महिलाओं ने इसमें भाग लिया। गाँधीजी ने उनसे चरखा को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बना लेने की अपील की।[20] जमशेदपुर की महिलाओं की बैठक में 'देशबन्धु स्मारक कोष' के लिए अच्छा चन्दा इकट्ठा हुआ, जिनमें कुछ जेवरात भी थे। राँची की महिलाओं की बैठक में गाँधीजी ने इस कोष के लिए चन्दा माँगा। श्रोताओं में कई औरतों ने, जिनके पास पैसे नहीं थे, अपने गहने दे दिये। देवघर में गाँधीजी खडगडीहा गये, जहाँ उनकी अपील पर महिलाओं ने 'देशबन्धु कोष' के लिए खुलकर चन्दा दिया। महात्मा गाँधी का 1925 का दौरा हाजीपुर में समाप्त हुआ, जहाँ उन्हें लगभग 5000 रुपया का बटुआ भेंट किया गया ।

राजनीतिक आन्दोलन की शून्यता की स्थिति में गाँधीजी के रचनात्मक कार्य के कारण मात्र राष्ट्रीयता की भावना ही जागृत नहीं हो रही थी, वरन् आन्दोलन को गतिशील भी बनाये रखा। इस काल में सम्पूर्ण देश में जनता को उसके राजनीतिक अधिकार के प्रति जागरूक करने, चरखा–खादी, साम्प्रदायिक एकता, छुआछूत निवारण, दलित वर्गों की स्थिति में सुधार, नशाबंदी आदि गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों को ही नहीं सम्पूर्ण भारत की जनता को जगाये रखा। इसके द्वारा पुरुष एवं महिला को आर्थिक स्वावलम्बन की ओर ले जाने का प्रयत्न किया गया, जिसमें बहुत सीमा तक सफलता भी मिली। इस आन्दोलन में एवं स्थगन के पश्चात् रचनात्मक कार्यों में भाग लेने वाली बिहार की महिलाओं में श्रीमती सैयद इमाम, बेगम रहमान, अली अनवर की बेगम श्रीमती अबुनिसा, श्रीमती सावित्री देवी, श्रीमती सरला देवी चौधरानी, श्रीमती लाल दौलत राम, जानकी देवी, हरमति देवी, मंदा देवी, लीला सिंह, प्रभावती देवी, भगवतीया देवी, श्रीमती सी. आर. दास, विन्ध्यवासिनी देवी, सुश्री शम्मी एवं गौरी दास प्रमुख है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बी०आर० नन्दा (संस्मरण) इंडियन वीमेन फ्रॉर द परदा दू मॉडर्निटी, पृ० 16.
2. विपिन चन्द्र मार्डन इंडिया, 1982, पृ० 175.
3. के०सी० व्यास द सोशल रेनेसा इन इंडिया, पृ० 174.
4. मोहनदास करमचंद गाँधी वीमेन एण्ड सोशल इनजस्टिस, पृ० 91–95.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- II, Issues-40, YEAR- April-June 2026

5. यंग इंडिया, 3 फरवरी 1927.
6. हरिजन, 02.2.1939.
7. शिवपूजन सहाय (संस्मरण) बिहार की महिलाएँ, पृ० 203.
8. यंग इंडिया, 17 अगस्त, 1921.
9. राजेन्द प्रसाद महात्मा गाँधी एण्ड बिहार, पृ० 42.
10. यंग इंडिया, 20 दिसम्बर, 1920.
11. द सर्चलाइट, 4 दिसम्बर, 1920, पृ० 4.
12. द सर्चलाइट, 8 दिसम्बर, 1920
13. बिहार सरकार, पॉलिटिकल स्पेशल, संचिका संख्या 360/1920, पृ० 13.
14. द सर्चलाइट, 8 दिसम्बर, 1920, पृ० 5.
15. सर्चलाइट, 4 सितम्बर, 1921, पृ०–5.
16. द सर्चलाइट, 13 नवम्बर, 1921, पृ० 5.
17. नन–कोऑपरेशन एण्ड खिलाफत मूवमेंट इन बिहार एण्ड उड़ीसा, पृ० 65.
18. द सर्चलाइट, 13 नवम्बर, 1921, पृ० 5.
19. शिवपूजन सहाय– बिहार की महिलायें, 1962, पृ० 311.
20. द बिहार हेराल्ड, 19 सितम्बर, 1925, पृ०–3.

*****